



# स्वतंत्रता, स्व का तंत्र..

भारत में स्वतंत्रता दिवस हर साल पंद्रह अगस्त को राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है, जब भारतीय ब्रिटिश शासन से अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता की लम्बी गाथा को याद करते हैं। ये आजादी मिली है और आंदोलनों और हजारों स्वतंत्रता सेनानियों की आहुतियों से। आजादी के बाद भारत के पहले प्रधानमंत्री ने दिल्ली के लाल किले पर झंडा फहराया।

## स्वतंत्रता और परतंत्रता

स्वतंत्रता और परतंत्रता, ये दोनों शब्द विरोधाभासी हैं। तंत्र का अर्थ ही है व्यवस्था, सिस्टम। जैसे राजतंत्र, तो राज और तंत्र, ये दो शब्द हैं, जिससे समझा जा सकता है कि एक राजा और जिसके द्वारा चलायी जा रही हुकूमत की व्यवस्था, जिसे तंत्र कहते हैं। हम जानते हैं कि भारत परतंत्र था, जहां भारतीयों का तंत्र नहीं था, ब्रिटिश का तंत्र था, इसलिए हम स्वयं को परतंत्र मानते थे। पंद्रह अगस्त को हम ब्रिटिशर्स से मुक्त हुए और भारतीयों के चुने हुए प्रधानमंत्री की व्यवस्था में चलना आरंभ किया जिसे स्वतंत्रता कहते हैं। ये तो बहुत खुशी की बात है कि हमने अहिंसा में छिपी हुई शक्ति के बल से ब्रिटिश के शासन का अंत कर दिया। पर आज हम अपनी ओर देखें कि क्या हम स्वतंत्र हैं? बाह्य रूप से हम स्वतंत्र हो गये, लेकिन क्या हम स्वयं में स्वतंत्र अनुभव करते हैं?

## स्वयं का अपना तंत्र

स्वतंत्र यानि, स्वयं का स्वयं के ऊपर अपना तंत्र है? सोचें तो ये बड़ा अजीब लगता है, पर ये वास्तविकता है कि हम अभी भी अपने आदतों के गुलाम, आदतों के वश, बुराइयों के गुलामी के तले ही जी रहे हैं। बुराइयों ने हमें इतना गुलाम कर रखा है, जो हमारी विश्व में पहचान रही है कि भारत सोने की चिड़िया था, इसको हम भूल चुके हैं। आये दिन समाचार पत्र हमारे स्व के तंत्र की पराधीनता की खबरों से ही भरे पड़े रहते हैं। अत्याचार, बलात्कार, लड़ाई झगड़े, भ्रष्टाचार आदि की खबरें पढ़ सुनकर कान ही पक गये हैं। क्या यही स्वतंत्रता है? आजादी के लिए हजारों सेनानियों ने अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया। क्या उनकी कल्पना यही थी जो आज हम देख रहे हैं? नहीं ना। तो फिर अभी हमें स्वयं में व्यास बुराइयों से स्वतंत्र होना है और स्वयं का स्वयं पर शासन करना है। आज हम उस पराधीनता के वश होकर घृणित कर्म करने के लिए प्रेरित होते हैं। इससे हमें स्वतंत्र होना है।

**स्वतंत्रता सबको प्रिय है। पर स्वतंत्रता माना जहाँ स्वयं के ऊपर स्वयं का तंत्र सुचारू रूप में कार्य करता हो। स्वतंत्रता का मतलब स्वच्छता का न होना है। स्वयं के मूलभूत उसूलों के साथ जीवन जीने का नाम ही है स्वतंत्रता। जैसे राजतंत्र की स्वतंत्रता मिलते ही हम स्वयं को सम्प्रभु देश समझते हैं, पर उसके तंत्र को संविधान के अनुरूप चलाते हैं, ठीक वैसे ही मनुष्य जीवनशैली का भी एक तंत्र है, उसे भी दायरे में रहकर जीना ही स्वतंत्रता है। तो आइये, इस बार हम स्वतंत्रता के दिन पर देश के साथ साथ स्वयं की जीवनशैली रूपी तंत्र को भी देखें और स्वच्छता से परे रहें.....**



## स्व+हित के साथ पर+हित का तंत्र

स्वतंत्र माना, श्रेष्ठ, शुभ और सर्व हितकारी सोच का तंत्र। जो हमारे जीने की शैली में हो। कहते हैं, सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। अर्थात् सभी सुखी हों, सबका भला हो, सभी निरोगी हों। तभी सच्चे अर्थ में हम स्वतंत्र कहे जायेंगे। तो स्व को जानना और स्व को जो चाहिए, उसी अनुरूप जीवन का निर्वहन करना, इसी का नाम ही स्वतंत्रता है। मनुष्य को पाँच चीजें चाहिए, चाहे वो किसी भी मजहब का हो, किसी जाति का हो, कुल का हो या किसी भी देश का हो, वे सभी पाँच चीजों के लिए ही जी रहे हैं। वो मिलेगा ही तब जब स्वयं पर स्व का तंत्र होगा। तो ये पाँच चीजे हैं सुख शांति, प्रेम, खुशी, ज्ञान और शक्ति। हर इंसान को शांति प्रिय है, वैसे ही सभी ये चाहते हैं कि मुझसे सभी प्यार करें।

ठीक वैसे ही वो अपने को सुखी व खुश, तरोताजा और उमंग उत्साह में रखना पसंद करता है। पर वो सही खुशी, निःस्वार्थ प्रेम और शांति उसे मिलती तब है जब उसे पाने का ज्ञान हो। किससे उसको खुशी मिलेगी, किससे नहीं मिलेगी, उसका ज्ञान होना जरूरी है, ज्ञान माना समझ, विवेक। ज्ञान तो है, पर जहाँ शक्ति नहीं, तो वो भी उससे कार्यान्वित करना नामुमकिन होता है। जैसे कि एक बीमार व्यक्ति शरीर में ताकत न होने से वो कोई भी कार्य करने में असमर्थ होता है। तो उसे शक्ति भी चाहिए। ये पाँचों चीजें जब हमारे जीवन में पूर्ण रूप से विकसित हैं, तभी हम स्वतंत्र हैं। अन्यथा तो हमें किसी न किसी पर आधारित रहना होगा, दूसरों से मांगना होगा।

## जानें स्वतंत्रता को विकसित करने का फार्मूला

परम शक्ति परमेश्वर ने हम सभी को ये पाँचों चीजें प्रचुर मात्रा में दी हैं, पर हमने उसको न जाना, न पहचाना और बाहर की चकाचौंध में अपने आप में मौजूद इन पाँचों चीजों को भूल गये और हमारी शक्तियाँ, हमारे खजाने बिना प्रयोग यूँ ही सुषुप्त रह गये। इसी का परिणाम आज के समाज में परिलक्षित होता है। सब दूसरे से मांग रहे हैं, छीन रहे हैं, हड़प रहे हैं, दूसरे पर अधिकार जमाने की कोशिश कर रहे हैं, स्वयं को छोड़कर। पर आपको हम खुशखबरी देना चाहते हैं कि इस भूलभुलैया के मध्य परमात्मा हमें अपनी पहचान दिलाकर कहते हैं कि ये तो सब तुम्हारे पास मौजूद है, क्योंकि तुम मेरे हो, और आप जाने अनजाने पुकारते भी हो कि शांति दो, सुख दो, प्यार दो। ये सब तो आपका ही है, पर इसको अपना समझकर बस आप उसे देना आरंभ करो। देना माना ही जो आप चाहते हैं उसको विकसित करना। देने वाले को देवता कहते हैं, और जो आप देते हैं वही आप पाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, जैसा करेंगे वैसा पायेंगे और जैसा बोयेंगे वैसा काटेंगे। तो परमात्मा अभी हमें उन खजानों को कैसे अपना खजाना बनायें, उस बारे में सिखा रहे हैं, समझा रहे हैं। और कहते हैं कि इसी विधि से ही आप स्वतंत्र हो पायेंगे और आप किसी के भी अधीन नहीं रहेंगे। तो इसके लिए आपको भी हम कहना चाहते हैं कि आप भी स्वतंत्र होकर इसी फॉर्मूले को अपनाकर इस जीवन को स्वतंत्रता से जीयें और सभी को जीने दें। बस 'स्व' तंत्र को विकसित करें और जीवन को जीने का आनंद लें।



**वेरावल-शापर(गुज.)।** सहदेव जी,महा. मंत्री को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. हिना।



**इथोपिया।** अनुराग श्रीवास्तव,एम्बेसडर ऑफ इंडिया इन इथोपिया एंड जिबूटी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण। साथ हैं ब्र.कु. एलजाबेथा।



**माउण्ट आबू।** पाण्डव भवन के डिस्ट्री हॉल में ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में संत श्री गुरु बसव आराध्य स्वामीजी सोरब,कर्नाटक तथा उनके शिष्यों के साथ ब्र.कु. रामनाथ,मुख्यालय संयोजक,धार्मिक प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज।



**जोधपुर-राज।** सुरक्षा प्रभाग द्वारा पुलिस कर्मियों के लिए आयोजित तनाव मुक्ति कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शील दीदी, ए.एस.पी. प्रेम देवधन, ब्र.कु. शिखा, ब्र.कु. यशपाल तथा इस्पेक्टर अमन।



**मोहाली-पंजाब।** विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित सेमिनार में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता। मंचासीन हैं जीतेन्द्र शर्मा,प्रिन्सीपल चीफ कंजरवेटर ऑफ फॉरेस्ट तथा अन्य।



**भुवनेश्वर।** गतिकृष्णा लैगून में आयोजित आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी। साथ हैं ब्र.कु. दुर्गा तथा अन्य।



**रीवा-म.प्र।** विंध्य प्रतिभा सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब.कु. निर्मला को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए क्षेत्रीय सांसद जनार्दन मिश्रा, पिछड़ा वर्ग आयोग के चेयरमैन प्रदीप पटेल, विंध्य विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष बिमलेश मिश्रा, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष प्रदीप पांडे, रीवा नगर की महापौर ममता गुप्ता तथा कल्पना कल्याण समिति के अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह।



**मोकामा-बिहार।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर श्याम मार्केट में आयोजित कार्यक्रम में योग के बारे में बताते हुए ब्र.कु. विपिन। साथ हैं ब्र.कु. निशा।



**मुम्बई-जोगेश्वरी ईस्ट।** सेवाकेन्द्र की 10वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. दिव्य प्रभा,सबजोन इंचार्ज,बोरीवली, ब.कु. रंजन, ब्र.कु. प्रफुला, ब्र.कु. कुंतो, ब्र.कु. कोकिला, ब्र.कु. बिन्दु, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।



**बैंगलूरु।** जनरल मोटर्स टेक्निकल सेंटर में लॉग इन टू जॉयफुल लाइफ विषय पर कार्यशाला के पश्चात् समूह चित्र में कर्मचारियों के साथ ब्र.कु. प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन, ब्र.कु. कल्याणी तथा ब्र.कु. कविता।